International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन पर जनसांख्यिकीय कारकों के प्रभाव का अध्ययन

सचिन कुमार गंगवार

असिस्टेंट प्रोफेसर (Guest Faculty), प्रीती रूरल इंस्टीटयूट फॉर टेक्नोलॉजी & एजुकेशन, बरेली, उत्तर प्रदेश

सारांश

शिक्षा प्रणाली में शिक्षक-प्रशिक्षकों की कार्य संतुष्टि और समायोजन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे उनकी कार्य दक्षता एवं शिक्षण प्रभावशीलता प्रभावित हो सकती है| भावी शिक्षकों के प्रशिक्षण की गुणवत्ता का संवर्धन करने के लिए शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन को समझना आवश्यक है| इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन का अध्ययन करना है| अध्ययन में आंकड़े एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया| प्रतिदर्श का चयन करने के लिए महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली से सम्बद्ध स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत 120 शिक्षक-प्रशिक्षकों को साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा चयनित किया गया| व्यावसायिक समायोजन के मापन के लिए ए. एच. रिजवी (2018) द्वारा विकसित एवं प्रमाणीकृत 'व्यावसायिक समायोजन अनुसूची' का प्रयोग किया गया| अध्ययन से प्राप्त हुए परिणामों से स्पष्ट है कि स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन में निवास स्थान, लिंग एवं शिक्षण अनुभव के अनुसार कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया| समायोजन को अच्छा करने के लिए जनसांख्यिकीय आंकड़ों के बजाय शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और कार्यस्थल पर तनाव प्रबंधन पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए| शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण तकनीकों को अपनाने पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि यह उनके वास्तविक समायोजन का आधार है।

Keywords: Professional Adjustment, Teacher Educatiors, Quality Education

प्रस्तावना:

शिक्षक बालकों के सर्वांगीण विकास करने में सहायक होता है। शिक्षक बालकों की योग्यता, क्षमता, रूचि, अभिरूचि आदि के अनुसार शिक्षा प्रदान करता है। छात्रों की आवश्यकताओं व प्रकृति के अनुसार शिक्षक शिक्षण पद्धति अपनाता है। विद्यालय में किसी भी क्रिया को सिखाने का दायित्व शिक्षक का होता है। वह छात्रों को ज्ञान व क्रिया का अधिगम कराने के लिए उचित वातावरण की तैयारी करता है। अतः शिक्षक का शिक्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया में सिद्धहस्त होने के साथ शैक्षिक परिस्थितियों में समायोजित होना बहुत महत्वपूर्ण है। एक कुसामयोजित शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता नाकरात्मक रुप से प्रभावित होती है और जिसका प्रभाव विद्यार्थियों के अपेक्षित विकास पर पड़ता है। इसके विपरीत, कुसमायोजन की स्थिति में शिक्षक तनाव ग्रस्त, असंतुष्ट और निम्न प्रेरित हो सकते हैं, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है। आज का शैक्षिक परिवेश तकनीकी उन्नति से प्रभावित है।

वर्तमान में ऑनलाइन शिक्षण, मिश्रित अधिगम (Blended Learning), स्मार्ट कक्षाएँ और डिजिटल मूल्यांकन प्रणाली सामान्य हो चुके हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) आधारित शिक्षण उपकरण शिक्षण प्रक्रिया को अधिक व्यक्तिगत और प्रभावी बना रहे हैं। व्यावसायिक समायोजन के अभाव में शिक्षक इन परिवर्तनों के साथ नहीं चल पाएंगे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) में शिक्षक को शिक्षा प्रणाली का केंद्र बिंदु माना गया है। इसलिए गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षकों का व्यावसायिक समायोजन बहुत अच्छा होना चाहिए|

शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे तीव्र परिवर्तन वैश्वीकरण, उदारीकरण, तकनीकी क्रांति, डिजिटल शिक्षण, ऑनलाइन अधिगम, बहुविषयक दृष्टिकोण तथा नीतिगत सुधारों ने शिक्षा के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है। इन परिवर्तनों के अनुरूप शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए व्यावसायिक समायोजन को बेहतर बनाना अनिवार्य हो गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में संरचनात्मक और कार्यात्मक परिवर्तन हुए हैं, इसलिए यह जानना आवश्यक है कि शिक्षक-प्रशिक्षक इन परिवर्तनों के साथ किस सीमा तक समायोजित हो पा रहे हैं? और किन कारकों के कारण उनके समायोजन स्तर में अंतर देखा जाता है। किसी भी शिक्षण संस्थान में शिक्षकों के अनुभव, वहां का वातावरण, कार्यभार, शिक्षक की समायोजन की योग्यता आदि कारक उनके समायोजन एवं कार्य सन्तुष्टि को प्रभावित करते हैं| Sachdej (2018) ने अपने शोध में पाया कि नकारात्मक और सकारात्मक अनुभवों का संयोजन इंटरनेशनल स्कूल सेटिंग में नए टीचरों के लिए सफल कार्य और सांस्कृतिक समायोजन का कारण बन सकता है, जिससे कार्य संतुष्टि और शिक्षकों के संस्थान में बने रहने में ठहराव आ सकता है।

शिक्षकों का प्रशिक्षण उन्हें भविष्य में उनके कार्य क्षेत्र में आने वाले कठिनाईयों का सामना करके उनका समुचित समाधान ढूंढने के लिए तैयार करता है| लेकिन शिक्षक प्रशिक्षण का स्वरूप एक जैसा न होने से भी कई बार शिक्षकों को अपने व्यावसायिक कार्यकाल में बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और वे सही ढंग से समायोजन नहीं कर पाते हैं| इससे सम्बन्धित Koesoemo Ratih, Fitri Kurniawan, Nurhidayat, Harun Joko Prayitno, and Amelia T. Buan (2021) के शोध में इंटरनेशनल टीचिंग प्रैक्टिस करने में EFL प्री-सर्विस टीचर्स के अनुभव की चुनौतियों और एडजस्टमेंट की जांच की और शोध में पाठ योजना तैयार करना, टीचिंग मीडिया और अधिगम सामग्री तैयार करना, शिक्षण के समय को निर्धारित करना, नए वातावरण और संस्कृति में समायोजित करना, नई शिक्षा व्यवस्था में समायोजित करना, शिक्षण सामग्री की मांग के अनुसार समायोजन करना और विद्यार्थियों की कठिनाईयों का सामना करना आदि चुनौतियां इनके सामने आती हैं। इसलिए शिक्षकों की तैयारी के संदर्भ में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस पर विचार विमर्श होना आवश्यक है।

शिक्षक-प्रशिक्षकों के कई मुश्किल कार्य होते हैं और इन्हें करने के लिए व्यावसायिक विकास के अवसर मिलते हैं। इसलिए, शिक्षक-प्रशिक्षक की भूमिका अपनाने के बाद उन्हें उससे जुड़े ज्ञान और कौशलों की आवश्यकता होती है, क्योंकि शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक विकास पर प्रभाव डालने वाले कई पक्षों के अतिरिक्त शिक्षण कौशल और ज्ञान के भी ज़रूरी कार्य हैं जिन पर प्रमुखत: से ध्यान देने की आवश्यकता है (Su and Wang, 2022)।

एक शोध में Yanan Zhang, Shenji Zhou, Xi Wu, Alan C.K. Cheung,(2024) ने शिक्षकों की वैश्विक क्षमता पर वर्तमान प्रशिक्षण पहलों के प्रभाव को समझने और भविष्य की डिजाइन का मार्गदर्शन करने के लिए 'पूर्व-सेवा और सेवाकालीन शिक्षकों की वैश्विक क्षमता पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रभाव' का एक मेटा विश्लेषण किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को "स्टेज-उपयुक्त" अधिगम अनुभव को शामिल करके बेहतर बनाया जा सकता है जो शिक्षकों की ग्लोबल योग्यता को बढ़ा सकता है। इसी प्रकार, Golis (2025) ने अपने शोध में निष्कर्ष निकाला कि प्रतिभागी शिक्षकों ने विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर और स्थानीय तरीकों को अपनाकर अपने स्कूल के वातावरण में खुद को समायोजित कर लिया था। इस दृष्टि से शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ समायोजन के लिए प्रेरित करने, उनके बारे में ज़्यादा संवेदनशील होना और कक्षा प्रबंधन के तरीकों को महत्व देना आवश्यक है। इस शोध में शिक्षक प्रतिभागियों के अनुसार स्कूल के सेवारत प्रशिक्षण को पर्याप्त नहीं था| इस शोध के अनुसार नया योगदान समायोजन रणनीति की व्यवस्थित ढंग से पहचान करना और विद्यार्थियों के गलत व्यवहार से निपटने में सहायता करना था।

शिक्षक-प्रशिक्षकों के लिए मुख्य चुनौती उनकी कई भूमिकाएं और ज़िम्मेदारियाँ हैं, जिसमें शिक्षण से अलग प्रशासनिक कार्य और बाहरी शैक्षिक सेवाएं शामिल हैं। कार्य भार की वजह से उन्हें अपनी भूमिका और योजना को लागू करने में मुश्किलें आती हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों को सहयोग और नियोजन में चुनौतियों का सामना करने से उनका कार्य पूरा होने से प्रभावित हुआ। इस शोध कर परिणाम शिक्षक-प्रशिक्षकों को अपना कार्य भार प्रभावशाली ढंग से प्रबंधित करने में सहायता करने के लिए संस्थानिक सहायता की आवश्यकता पर ज़ोर देते हैं क्योंकि संस्थान की सहायता के बिना शिक्षक अपने शिक्षण और अतिरिक्त कार्यभार के मध्य समुचित समायोजन नहीं कर सकते हैं (Sengsoulintha, 2025)।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

Catherine (2014) ने शोध निष्कर्ष निकाला कि महिला प्रशिक्षुओं, जन्म क्रम पहले होने, ग्रामीण, विवाहित और परास्नातक शैक्षिक योग्यता

वाले बी.एड. प्रशिक्षुओं के मध्य अपने समकक्ष साथियों की तुलना में समायोजन का स्तर अच्छा पाया गया| Rizvi, A. H. (2015a) के शोध का प्रमुख उद्देश्य विवाहित शिक्षकों का व्यावसायिक समायोजन का अध्ययन करना था और निष्कर्ष में पाया कि विवाहित एवं अविवाहित शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं था| Rizvi, A. H. (2015b) ने शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन के स्तर का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि स्थाई और अस्थाई शिक्षकों के मध्य व्यावसायिक समायोजन स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं था तथा 13-19% शिक्षक अच्छी तरह समायोजित पाए गए तथा 64-72% शिक्षक औसत स्तर पर समायोजित थे| शिक्षण की प्रवृति के स्थायित्व का कोई खास प्रभाव शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन पर नहीं था| Prakash, J., & Hooda, S. (2016) ने निष्कर्ष निकाला कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यावसायिक समायोजन में सार्थक अन्तर था , इसी प्रकार महिला शिक्षकों के व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यावसायिक समायोजन भी सार्थक अन्तर पाया गया जबकि पुरुष शिक्षकों के व्यक्तिगत, सामाजिक एवं व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया| Anand, A., & Annadurai, R. (2018) ने पाया कि लिंग और निवास के आधार पर बी. एड. प्रशिक्षुओं के सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर था, जबकि विषय वर्ग (कला और विज्ञान वर्ग) के अनुसार बी. एड. प्रशिक्षुओं के सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं था लेकिन सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक सम्बन्ध पाया गया| Rizvi, A. H. (2018) ने पाया कि अंग्रेजी और हिन्दी माध्यम के शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं था|

Srivastava, P. S., & Majumdar, D. (2020) ने स्पष्ट किया कि उच्च एवं निम्न संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर था जबकि उच्च एवं निम्न आध्यात्मिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया गया| लेकिन विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि, अध्यात्मिक बुद्धि और सामाजिक समायोजन समस्याओं में नकारात्मक सम्बन्ध पाया गया| Muralikrishna, T. and Shakila, J. (2023) ने सेकेंडरी स्कूल के शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन के अध्ययन में पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन का स्तर मध्यम पाया गया तथा शिक्षण विषय, शिक्षण अनुभव, अकादमिक व व्यावसायिक योग्यताओं के अनुसार माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। Kanoje, J.P. (2023) ने दुर्ग जिले के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन की जाँच में पाया कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिंग और वैवाहिक स्थिति के आधार पर व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं था जबकि सरकारी और गैर-सरकारी शिक्षकों के मध्य व्यावसायिक समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया। Vidyalakshmi, M.V. & Praveena, K.B. (2024) ने शिक्षक-प्रशिक्षकों के शिक्षक समायोजन पर शोध में पाया कि 14.54% शिक्षक-प्रशिक्षकों का समायोजन बहुत अच्छा था, 36.36% शिक्षक-प्रशिक्षकों का समायोजन स्तर अच्छा, 30% शिक्षक-प्रशिक्षक औसत समायोजन वाले पाए गए| इससे स्पष्ट होता है कि ज्यादातर शिक्षक-प्रशिक्षकों का समायोजन का स्तर अच्छा था। सरकारी और प्राइवेट शिक्षा महाविद्यालयों के शिक्षकों प्रशिक्षकों के मध्य शिक्षक समायोजन के मध्यमान प्राप्तांकों में कोई समानता नहीं थी।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

तकनीकी, नीतिगत, सामाजिक एवं अन्य परिवर्तनों के कारण समाज में शिक्षा भी प्रभावित हो रही है| ऐसे में भावी शिक्षकों के प्रशिक्षण की गुणवत्ता भी प्रभावित होगी और उनके प्रशिक्षण की गुणवत्ता कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों की क्षमताओं और कौशलों पर निर्भर करती है| शिक्षक-प्रशिक्षक भावी शिक्षकों को तभी गुणवत्ता पूर्ण प्रशिक्षण प्रदान कर सकते हैं जब वे अपने कार्य से सन्तुष्ट हों और उनका व्यावसायिक समायोजन बेहतर हो| शिक्षकों के व्यक्तिगत एवं व्यवसायिक गुण निश्चित ही उनकी पारिवारिक स्थिति, कार्य करने की दशाओं और शिक्षक के जीवन स्तर आदि प्रमुख तथ्यों द्वारा प्रभावित होते इसलिए शिक्षा महाविद्यालयों में शिक्षक-प्रशिक्षकों के शिक्षण कार्य को उत्तम बनाने हेतु अनेक साधनों एवं उपकरणों की व्यवस्था की जा रही है फिर भी पर्याप्त सफलता क्यों नहीं मिल रही है? क्या प्राध्यापकों की व्यावसायिक समायोजन का स्तर अपेक्षित स्तर का है? क्या स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्राध्यापकों की व्यावसायिक समायोजन में अंतर है? इन प्रश्नों के उत्तर ढूंढने के उद्देश्य से इस अध्ययन को आयोजित करने की आवश्यकता महसूस हुई है| वर्तमान अध्ययन के परिणाम शिक्षक प्रशिक्षण के योजनाकारों, नीतिकारों एवं अन्य कार्यक्रमों को निर्धारित करने वाले लोगों के लिए मार्गदर्शक परिणामों के रूप में सहायक हो सकेंगे|

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसन्धान की प्रकृति और चरों को ध्यान रखते हुए शोधकर्ता द्वारा निम्न शोध उद्देश्य निर्मित किये गए हैं –

1. स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शहरी और ग्रामीण शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन का अध्ययन करना|
2. स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला और पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन का अध्ययन करना|
3. स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों के शिक्षण अनुभव के आधार पर व्यावसायिक समायोजन का अध्ययन करना|

अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु निम्न शून्य परिकल्पनाएं निर्मित की गई हैं-

1. स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है |
2. स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है |
3. स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों के शिक्षण अनुभव के आधार पर व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

शोध विधि एवं प्रक्रिया

अध्ययन के वर्णनात्मक प्रकृति का होने के कारण आंकड़े एकत्र करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया| अध्ययन के प्रतिदर्श का चयन करने के लिए महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली से सम्बद्ध स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की सूची बनाई गयी| तत्पश्चात यादृच्छिक प्रतिदर्श पद्धति की लॉटरी विधि द्वारा 30 स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का चयन किया गया| इसके पश्चात चयनित महाविद्यालयों में से कुल 120 शिक्षक-प्रशिक्षकों (प्रत्येक महाविद्यालय से 4 शिक्षक) को साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा प्रतिदर्श के रूप मे चयनित किया गया| व्यावसायिक समायोजन के मापन के लिए ए. एच. रिजवी (2018) द्वारा विकसित एवं प्रमाणीकृत 'व्यावसायिक समायोजन अनुसूची' का प्रयोग किया गया, जिसकी विश्वसनीयता 0.90 थी| संकलित आंकड़ों को उद्देश्यों के अनुसार व्यवस्थित करके शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया|

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

वर्तमान शोध में स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक-प्रशिक्षकों की जनसांख्यिकीय विशेषताओं के आधार पर उनके व्यावसायिक समायोजन में अंतर की तुलना करने के लिए शून्य परिकल्पनाओं की जाँच की गयी है और आगे दी गयी तालिकाओं में इनका वर्णन किया गया है|

शून्य परिकल्पना–01 स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक-प्रशिक्षकों के मध्य व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है |

तालिका–1 स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन मध्यमानों की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक मध्यमान त्रुटि	स्वतन्त्रता अंश	टी- मान (द्वि-पुच्छीय)
शहरी	95	55.59	17.24	1.77	118	1.35 (NS)
ग्रामीण	25	60.92	17.63	3.53		

* = Significant at .05 level, ** = Significant at .01 level, NS = Not significant

तालिका–1 में दिए गए परिणामों से स्पष्ट है दोनों समूहों के व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है| अत: दोनों समूहों में सार्थक अंतर नहीं होने की शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं की जा सकती है ($t = 1.35$, $p > .05$) और शोधकर्ता उपरोक्त शून्य परिकल्पना को स्वीकार करता है| इससे निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन पर उनकी निवास स्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है| ग्रामीण शिक्षक-प्रशिक्षकों का मध्यमान (60.92) तथा मानक विचलन (17.63) शहरी शिक्षक-प्रशिक्षकों के मध्यमान (55.59) तथा मानक विचलन (17.24) से थोड़ा अधिक है| निष्कर्षत: ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन का स्तर शहरी क्षेत्र के शिक्षकों से थोड़ा अधिक प्रतीत होता है|

शून्य परिकल्पना–02 स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों के मध्य व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है |

तालिका–2 स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन के मध्यमानों की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक मध्यमान त्रुटि	स्वतन्त्रता अंश	टी- मान (द्वि-पुच्छीय)
महिला	50	58.54	16.96	2.40	118	1.36 (NS)
पुरुष	70	56.49	16.39	1.96		

तालिका–2 से स्पष्ट है कि स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है ($t = 1.36$, $p > .05$)| अत: लिंग के आधार पर दोनों समूहों के व्यावसायिक समायोजन में सार्थक अंतर होने की उपरोक्त शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है| इससे निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लिंग प्रकार व्यावसायिक समायोजन करने की क्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव पैदा नहीं करता है| महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों का मध्यमान (58.54) तथा मानक विचलन (16.96), पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों के मध्यमान (56.49) तथा मानक विचलन (16.39) से थोड़ा अधिक है | निष्कर्षत: महिला शिक्षक-प्रशिक्षकों का व्यावसायिक समायोजन का स्तर पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों से थोड़ा अधिक प्रतीत होता है| इसका कारण महिलाओं, नम्य और संवेदनशील होना हो सकता है|

शून्य परिकल्पना–03 स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत 10 वर्ष शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों एवं 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों के मध्य व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है|

तालिका–3 स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों के शिक्षण अनुभव के आधार पर व्यावसायिक समायोजन की तुलना

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक मध्यमान त्रुटि	स्वतन्त्रता अंश	टी- मान (द्वि-पुच्छीय)
10 वर्ष तक शिक्षण अनुभव	65	59.14	16.33	2.041	118	.385 (NS)
10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव	55	57.88	18.09	2.559		

तालिका–3 में दिए गए परिणामों से स्पष्ट है कि शिक्षण अनुभव के उपरोक्त दो वर्गों में विभाजित स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है ($t = .385$, $p > .05$)| अत: उपरोक्त शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है| 10 वर्ष शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों का मध्यमान (59.14) व मानक विचलन (16.33) तथा 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों के मध्यमान (57.88) व मानक विचलन (18.09) से थोड़ा अधिक है | निष्कर्षत: 10 वर्ष शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों का व्यावसायिक समायोजन का स्तर 10 वर्ष से अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक-प्रशिक्षकों से थोड़ा अधिक प्रतीत होता है|

शोध परिणाम

1. स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं था |
2. स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरुष शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन में भी कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया |
3. इसी प्रकार, स्ववित्त पोषित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक-प्रशिक्षकों के शिक्षण अनुभव के आधार पर व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया |

निष्कर्ष

परिणामों से स्पष्ट है कि लिंग, निवास स्थान एवं शिक्षण अनुभव के आधार पर स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों के शिक्षक-प्रशिक्षकों के व्यावसायिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया| इससे निष्कर्ष निकाला सकते हैं कि व्यावसायिक समायोजन एक 'आंतरिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया' है, इस पर वाह्य परिवेश, लिंग, या शिक्षण अनुभव का प्रभाव नहीं पड़ता है। इन शोध परिणामों से यह निष्कर्ष भी निकलता है कि शिक्षकों का व्यावसायिक समायोजन उनकी पृष्ठभूमि से अधिक उनके व्यक्तिगत कौशल, मानसिक स्वास्थ्य और विद्यालय के सहायक वातावरण पर अधिक निर्भर करता है। चूंकि शहरी और ग्रामीण शिक्षकों के समायोजन में कोई अंतर नहीं है, इसलिए प्रशासन को स्थानांतरण या प्रशिक्षण नीतियों में इन समूहों के लिए अलग-अलग मानदंड रखने के बजाय एक समान 'व्यावसायिक विकास कार्यक्रम' लागू करने चाहिए। समायोजन को अच्छा करने के लिए जनसांख्यिकीय आंकड़ों के बजाय शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य और कार्यस्थल पर तनाव प्रबंधन पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। शिक्षकों को आधुनिक शिक्षण तकनीकों को अपनाने पर ध्यान देना चाहिए, क्योंकि यही उनके वास्तविक

समायोजन का आधार है। इसके साथ ही शिक्षकों को समय-समय पर अपने व्यावसायिक व्यवहार का स्व-मूल्यांकन करना चाहिए ताकि वे बदलते शैक्षिक परिवेश में स्वयं को समायोजित कर सकें।

References

1. Anand, A., & Annadurai, R. (2018). Social adjustment and emotional maturity of B.Ed. trainees. *International Journal of Creative Research Thoughts (IJCRT), 6*(2), 20–28.
2. Catherine, J. (2014). Social adjustment among B.Ed. teacher trainees. *International Journal of Innovative Research and Development, 3*(6), 126–128.
3. Golis, A. (2025). The work adjustment of expatriate teachers employed in Chinese internationalised schools: a pedagogical perspective. *Educational Review*, *77*(1), 192–213. https://doi.org/10.1080/00131911.2024.2341042
4. Kanoje, J.P. (2023). A Study on Professional Adjustment of The Secondary school Teachers. *International Journal of Futuristic Innovation in Arts, Humanities and Management (IJFIAHM)*, *2*(2), 118-125. https://journal.inence.org/index.php/ijfiahm/article/view/88
5. Koesoemo Ratih, Fitri Kurniawan, Nurhidayat, Harun Joko Prayitno, and Amelia T. Buan (2021). Challenges and Adjustments in Undertaking Teaching Practice Across Countries in Disruptive Era of Education, *Asian Journal of University Education (AJUE)*, 17(1), 399-407. https://doi.org/10.24191/ajue.v17i4.16206
6. Muralikrishna, T. and Shakila, J. (2023). A Study on Professional Adjustment of Secondary School Teachers with Reference to Certain Variables, *IJCRT*,11(4), d911-d916.
7. Prakash, J., & Hooda, S. (2016). A comparative study of personal, social, and professional adjustment of teachers working in government schools of rural and urban areas. *International Journal of Management and Social Sciences Research Review, 1*(26), 70–74.
8. Rizvi, A. H. (2015a). Combining Marriage and Career: The Professional Adjustment of Marital Teachers. *Journal of Education and Practice*,6(11),115-118.
9. Rizvi, A. H. (2015b). A study of professional adjustment of teachers by nature of post. *Research on Humanities and Social Sciences, 5*(23), 29–32.
10. Rizvi, A. H. (2018). A Comparative Study of Professional Adjustment of English and Hindi Medium School Teachers. *International Journal of Research and Analytical Reviews (IJRAR)*, 5(3), 396-398.
11. Rizvi, A. H. (2018). *Professional adjustment schedule for teachers (Scale)*. National Psychological Corporation.
12. Sachdej, Rekha (2018). Evaluation of New Teacher Adjustment Factors in International Schools in Thailand to Improve Teacher Retention. Doctoral dissertation. Nova Southeastern University. Retrieved from NSUWorks, Abraham S. Fischler College of Education. (179) https://nsuworks.nova.edu/fse_etd/179.
13. Sengsoulintha K (2025) Teacher educators' challenges: focusing on teacher training colleges in Laos. *Front. Educ.* 10:1614060. doi: 10.3389/feduc.2025.1614060
14. Srivastava, P. S., & Majumdar, D. (2020). Study of social adjustment problems of university students in relation to their emotional intelligence and spiritual intelligence. *International Journal of Analytical and Experimental Model Analysis, 12*(1), 976–986.
15. Su, H. and Wang, J. (2022) Professional Development of Teacher Trainers: The Role of Teaching Skills and Knowledge. *Front. Psychol.* 13:943851. doi: 10.3389/fpsyg.2022.943851

16. Vidyalakshmi, M.V. & Praveena, K.B. (2024). A study on Teacher Adjustment of Teacher Educators in Colleges of Education, *Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR)*, 11(3), f89-f93.
17. Yanan Zhang, Shenji Zhou, Xi Wu, Alan C.K. Cheung (2024). The effect of teacher training programs on pre-service and in-service teachers' global competence: A meta-analysis, *Educational Research Review*, 45, DOI: https://doi.org/10.1016/j.edurev.2024.100627